२१ अगस्त १९०३

(१)

मिनर्वा लाज जेहलम

२ जून १९०३

माई डियर लालचंद !

कब तक लौटोगे ? मेरा जी तो अभी से घबराने लगा। जब तक तुम यहाँ थे तब तक मैं तुम्हें न समझ सका था। परन्तु अब पता लगा कि तुम्हारे और हरदयाल के बिना जीवन नीरस हो गया है, जैसे निमक-मिर्च के बिना भाजी बेस्वाद हो जाती है। अब न सबेरे घूमने का आनन्द आता है, न साँझ को बोटिङ्ग का। सारा दिन चित्त उदास रहता है, जैसे कोई क़ीमती वस्तु गुम हो गई हो। पता नहीं यह लम्बा समय कैसे बीतेगा। मेरी मानो तो जल्द वापस आ जाओ, फिर कभी अवकाश के समय चलेंगे। अब इस समय अकेले में तुम्हें कराची की सैर का क्या आनन्द आता होगा।

एक समाचार लिखता हूँ। निस्सन्देह पढ़कर आनन्द से उछल पड़ोगे। राय साहब हीरालाल के यहाँ मेरी सगाई हो गई है। २१ अगस्त को ब्याह हो जायगा। सम्भव है तुम्हें इसका विश्वास ही न आवे। और मैं स्वयं समझता था कि ऐसा होना असम्भव है। तुम्हें स्मरण होगा, हमारे बी० ए० के कोर्स में जो संस्कृत का नाटक पढ़ाया जाता था, उसमें एक स्थल पर विदूषक कहता है कि मैं प्रायः यही सोचता रहता हूँ कि आकाश का चन्द्रमा मुझे किस प्रकार

मिल सकता है ? ठीक यही अवस्था मेरी है। वरन मेरे लिए कौशल्या चन्द्रमा से भी बढ़कर है। मैंने उसे एक-दो ही बार देखा है, परन्तु मूर्ति हृदयपट पर अङ्कित हो गई है। वह ऐसी सुन्दर और लजीली है कि देखकर आँखें प्रसन्न हो जाती हैं। और इतना ही नहीं पढ़ी-लिखी है। आज सारे जेहलम में उसके जोड़ की पढ़ी-लिखी कोई लड़की नहीं। मैं कब सोच सकता था कि मेरा भी ऐसा सौभाग्य होगा। सारा शहर इस पर विस्मित हो रहा है। सुना करते थे कि परमात्मा जब देने पर आता है, तब छप्पर फाड़कर देता है। अब इस पर विश्वास हो गया।

मैं राय साहब से मिला था, मुझे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मैंने साफ़ साफ़ कह दिया कि मैं बहुत ही निर्धन हूँ। इस सम्बन्ध के योग्य नहीं। परन्तु उन्होंने केवल एक बार सिर हिला दिया। फिर बोले, तुम इस बात की कुछ भी चिन्ता न करो कि तुम्हारे पास रुपया नहीं है। मैं तुम्हारी योग्यता और भलमन्सी पर लट्टू हूँ। और मुझे पूरा भरोसा है कि तुम कौशल्या को प्रसन्न रख सकोगे। उन्होंने इशारे से यह भी कह दिया कि मैं अब तुम्हें वकालत न करने दूँगा। ब्याह के पश्चात् कोई व्यापार आरम्भ कर दो। लाला धनपतराय वकील को उन्होंने मेरी ओर से प्रबन्ध करने के लिए कहा है। सुना है, उनको कुछ रुपया भी दिया है। तुम जानते हो, मेरे माता-पिता तो कोई हैं ही नहीं, जो प्रबन्ध करें।

मैं चाहता हूँ कि तुम पत्र देखते ही जेहलम पहुँच जाओ। क्या समुद्र की सैर मेरी बातचीत से अधिक सुख देनेवाली है ?

तुम्हारा शुभचिन्तक—
किशोरचन्द।

(२)

बन्दर रोड, कराची
६ जून १९०३

ज्योतिषीजी महाराज !

प्रणाम ! रात को लालचन्द के नाम आया हुआ किशोरचन्द का पत्र देखकर तन-मन को आग-सी लग गई। राय साहब की बुद्धि पर क्या पर्दा पड़

गया, जो किशोरचन्द के साथ अपनी लड़की का ब्याह करने को तैयार हो गये। इतना तो आप जानते ही हैं कि वे कौशल्या के लिए लड़का बहुत देर से खोज रहे हैं। परन्तु अन्त में दो लड़कों को उन्होंने चुना, जिनमें से एक मैं और दूसरा किशोरचन्द है। किशोरचन्द इस बात को जानता तक न था, परन्तु मैं प्रायः टोह लेता रहता था। पिछले सप्ताह तक यही आशा थी कि इस दौड़ में जीत मेरी रहेगी। परन्तु अब एकाएक भाग्य ने पाँसा पलट दिया, और किशोरचन्द ने इस मैदान में भी मुझे हरा दिया। मैं स्कूल और कालेज में सदैव उससे दबता था, परन्तु यह पता न था कि प्रेम की परीक्षा में भी वह मुझसे आगे निकल जायगा। तथापि मैं इस पराजय को सहज ही में स्वीकार नहीं करूँगा। मैं इसके लिए अन्तिम श्वास तक लड़ूँगा।

किशोरचन्द का पत्र पढ़कर मुझे ऐसा दुःख हुआ है जैसे किसी के सारे जीवन की कमाई लुट गई हो। सारी रात नींद नहीं आई। अब आप ही का भरोसा है। यदि कुछ करें तो आशा हो सकती है, नहीं तो चारों ओर अथाह अन्धकार है। मैं आपसे केवल यही चाहता हूँ कि किशोरचन्द जब आपसे मिलने आये तो उससे कह दें, कि २१ अगस्त बहुत ही बुरा दिन है। उस दिन विवाह न होना चाहिए। किशोरचन्द वहमी मनुष्य है। राय साहब से अवश्य कहेगा कि इस तारीख़ पर विवाह नहीं होना चाहिए। राय साहब स्वतन्त्र विचार के मनुष्य हैं। वे इस बात की कभी परवा नहीं करेंगे। इससे आगे जो कुछ होगा, मैं समझ लूँगा।

सौ रुपये का नोट आपकी भेंट भेजता हूँ, स्वीकार कीजिएगा।

आपका दास—

हरदयाल।

(३)

मिनर्वा लाज, जेहलम

१६ जून १९०३

माई डियर हरदयाल!

मैं बहुत कठिनाई में पड़ गया हूँ। राय साहब ने ब्याह की तारीख़ २१

अगस्त नियत की है। परन्तु ज्योतिषी हरदत्तसिंहजी कहते हैं कि यह दिन बड़ा अशुभ है। और यदि इस दिन ब्याह हो गया तो तुममें से किसी को भी सुख प्राप्त न होगा। मैंने बहुत प्रयत्न किया है कि राय साहब इस तारीख़ को बदल दें। परन्तु वे किसी प्रकार भी नहीं मानते। आज़ाद ख़याल के आदमी हैं, वे इस बात की क्या परवा करते हैं कि मेरे हृदय पर ज्योतिषी की बातों का क्या प्रभाव हुआ है। यदि उनसे कह दूँ कि मेरी शङ्का का कारण ज्योतिषी की भविष्य-वाणी है तो निस्सन्देह उनका प्रेम घृणा में बदल जायगा। तुम्हारा विचार सत्य है कि अब राय साहब को मुट्ठी में करने का एक ही उपाय है कि मैं प्रत्येक काम उन्हीं के इच्छानुसार करूँ। परन्तु यह कैसे हो सकता है। उनकी इच्छा है कि ब्याह २१ अगस्त को अवश्य हो जाय। परन्तु मेरे कान में कोई कह रहा है कि यदि उस दिन ब्याह हो गया तो मेरे लिए यह भारी सङ्कट होगा और कौशल्या की भी कुशल न होगी। अब तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूँ। मुझे तो ख़याल भी न था कि इस विवाह में कोई विघ्न आ पड़ेगा। परन्तु अब पता लगा कि यह मेरी भूल थी। तुम जानते हो, फूल तक पहुँचने के लिए काँटों में हाथ डालना ही पड़ता है। प्रकृति के नियम का विरोध करने की किसमें सामर्थ्य है?

अब लिखो, कब तक वापस आओगे। तुम्हारे और लालचन्द के बिना जीवन दूभर हो गया है। लालचन्द ने मुझे लिखा है कि वह अभी तीन-चार मास तक न आ सकेगा। क्या यह हँसी तो नहीं? तुम तो शीघ्र लौट सकोगे न? जिस प्रकार हो सके, तुम्हें शीघ्र ही यहाँ पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिए। तुम्हारे यहाँ आ जाने से मेरी चिन्ता आधी रह जायगी और हर्ष दुगुना हो जायगा। मेरे पत्र का उत्तर वापसी डाक से दो कि कब तक आ सकोगे। मिस्टर लालचन्द से मेरा नमस्ते कहना और यह पत्र उन्हें दिखा देना। और सब प्रकार से कुशल है।

तुम्हारा शुभचिन्तक—

किशोरचन्द।

(४)

टैम्पल रोड, लाहौर

८ जुलाई १९०३

चिरञ्जीव हरदयाल ! परमात्मा तुम्हें प्रसन्न रखे !

पत्र तुम्हारा मिला, पढ़कर आश्चर्य हुआ और आँखों के सामने से पर्दा सा हट गया। मुझे स्वप्न में भी यह विचार न था कि किशोरचन्द में ये गुण भी होंगे। तुम जानते हो, चेहरे-मोहरे से तो वह ऐसा भलामानस और भोलाभाला प्रतीत होता है, मानों मुँह में दाँत ही नहीं। मुझसे कई बार मिला है, परन्तु हर बार मुझ पर नया प्रभाव छोड़कर गया है। तुम जानते हो, मैं तो अपने भाग्य को सराह रहा था कि ऐसा सच्चरित्र और भलामानस लड़का हाथ आ गया। परन्तु तुम्हारे पत्र से पता लगा कि वह कितना भयानक मनुष्य है। तुम लिखते हो कि यह सूचना मित्रता के नियम के विरुद्ध है। बेटा ! संसार में मित्रता से बढ़कर भी एक वस्तु है। और वह वस्तु सचाई है, जिसे किसी समय और किसी अवस्था में हाथ से न जाने देना चाहिए। तुमने यह सूचना देकर मुझ पर ऐसा उपकार किया है जिसका बदला मैं किसी प्रकार भी नहीं दे सकता। तुमने मेरी लड़की का जीवन बचा लिया है। तुम जानते हो, मैंने उसे कैसे लाड़-प्यार के साथ पाला है। तो क्या अब उसकी हत्या होती देखकर तुम्हें कष्ट न होता ?

अब मैं तुमसे एक बात खोलकर कह देना चाहता हूँ। तुम जानते हो, मेरे पास रुपये की कमी नहीं। मैं तो केवल सच्चरित्र लड़का चाहता हूँ, जिसके साथ मेरी लड़की का जीवन सुख से कट जाय। जेहलम में लड़कों की कमी नहीं। परन्तु मैंने केवल दो लड़कों को पसन्द किया था। यदि इसमें कुछ दोष है तो मैं बेटी का ब्याह दूसरे के साथ कर दूँगा। वह दूसरा लड़का कौन है ? यह तो तुम भले प्रकार जानते होगे। मेरा तात्पर्य्य तुम्हीं से है।

निश्चिन्त रहो। तुम्हारे पत्र का पता किशोरचन्द को नहीं होगा। मैं उससे कोई बात भी नहीं कहूँगा। इसकी आवश्यकता ही क्या है ? यदि २१ अगस्त का ब्याह वह नहीं मानता और इसे अस्वीकार करने का समुचित कारण नहीं बतलाता तो स्पष्ट बात है कि कारण ऐसा है, जो कहने के योग्य नहीं।

तुम जानते हो, मेरे स्वतन्त्र विचारों के कारण मेरी बहुत निन्दा हो चुकी है। अब इस आयु में थोड़ा सा बुरा-भला और सुन लूँगा। बहुत हुआ सम्बन्धी लोग दो-चार-दिन गुन गुन करते रहेंगे। कर लें। मेरा इससे क्या बिगड़ जायगा। परन्तु कौशल्या इसे सुनकर बहुत व्याकुल हुई है। वह कहती है, मैं अब किसी दूसरे पुरुष से ब्याह न करूँगी। परन्तु तुम जानते हो कि मैं उसकी रत्ती भर भी परवा नहीं करूँगा, और उसकी एक दो-दिन की प्रसन्नता के लिए उसका सारा जीवन नष्ट न होने दूँगा। मैं तुम्हारे पिता से मिल चुका हूँ। वह इस नाते को स्वीकार करते हैं। अब तुमको उचित है कि १० अगस्त तक जेहलम पहुँच जाओ। मैं आवश्यक काम से यहाँ आया था। कल जेहलम चला जाऊँगा। तुम्हारा उत्तर वहीं आना चाहिए।

हितचिन्तक—

हीरालाल।

(५)

मिनर्वा लाज, जेहलम

२५ जुलाई १९०३ ई०

माई डियर हरदयाल!

काम बिगड़ रहा है। राय साहब का स्वभाव बहुत कुछ बदल गया है। पहले मुझे देखकर आनन्द से उछल पड़ते थे, परन्तु अब जाता हूँ तो मुँह फेर लेते हैं, जैसे मुझसे अप्रसन्न हों। पता नहीं, इस अप्रसन्नता का कारण क्या है। कल मैंने उनसे साफ़ साफ़ कह दिया है कि २१ अगस्त को ब्याह कभी नहीं हो सकेगा। इसे सुनकर उनका चेहरा इस प्रकार तमतमा उठा जैसे गर्म किया हुआ ताँबा हो। कुछ देर चुप रहे। फिर एकाएक कुर्सी से उठ खड़े हुए और यह कहते कहते कमरे से निकल गये कि यदि २१ अगस्त को ब्याह नहीं हो सकता तो फिर किसी और तारीख़ पर भी नहीं हो सकता, मेरी ओर से जवाब समझो। इस जवाब से मुझ पर मानो वज्रपात हुआ। मैं पत्थर की मूर्ति के समान वहीं बैठा रह गया। नौकर से पूछा, तो पता लगा कि राय साहब बाहर चले गये हैं। हरदयाल! तुम्हीं बतलाओ इसका क्या तात्पर्य्य हो सकता है। मैं निर्धन हूँ, परन्तु निर्लज्ज नहीं हूँ। चोट खाये हुए सर्प की

नाई उठ खड़ा हुआ, और वापस चलने को था कि एकाएक चिक उठी और कौशल्या कमरे में आ गई। मेरा कलेजा धड़कने लगा। पाँवों में बेड़ी पड़ गई। सोचता था कि यदि कोई देख ले तो क्या कहे। सारे शहर में मिट्टी उड़ने लगेगी। मेरे मस्तक से पसीना टपकने लगा। परन्तु कौशल्या ने अपनी मीठी वाणी में कहा, "क्षमा कीजिए। मुझे यह निर्लज्जता शोभा नहीं देती। परन्तु मेरा आपसे मिलना आवश्यक था।" मैंने अपने हृदय की सारी शक्ति लगा दी, परन्तु सौन्दर्य्य के तेज ने मुँह न खोलने दिया। हठात् भूमि की ओर देखने लगा, यद्यपि मेरे जीवन की समस्त आशाएँ उसके चेहरे पर जमी हुई थीं।

कौशल्या ने पूछा, "पिताजी आपसे नाराज़ हैं क्या?"

यह कहते समय उसके होठ काँप रहे थे, जैसे सितार के तार थरथरा रहे हों।

मैंने यत्न करके उत्तर दिया, "हाँ! ऐसा ही जान पड़ता है।"

"परन्तु क्यों?"

"इसका कारण अभी तक मैं नहीं समझ सका।"

"आपके विरुद्ध एक पत्र आया है।"

मेरा श्वास होठों तक आ गया। समझा कि रहस्य खुल गया। अधीर होकर बोला, "किसने लिखा है?"

"कौशल्या ने उत्तर दिया, 'यह मुझे भी पता नहीं।"

"क्या लिखा है?"

"मैं यह भी नहीं जानती। परन्तु जिस दिन से पत्र आया है, उसी दिन से पिताजी बावले से हो रहे हैं। दिन भर आपके विरुद्ध बोलते रहते हैं। कहते थे यह ब्याह नहीं हो सकेगा, परन्तु मैंने साफ़ साफ़ कह दिया है कि मैं किसी और से ब्याह न करूँगी।"

यह कहते कहते उसकी आँखें नीचे झुक गईं और मुँह अनार के दाने की तरह लाल हो गया। मेरे हर्ष की कोई थाह न थी, जैसे कुबेर का ऐश्वर्य मिल गया हो। सहसा मैंने पूछा, "परन्तु पत्र में क्या लिखा है?"

कौशल्या ने इसका कोई उत्तर न दिया। प्रत्युत प्रश्न के उत्तर में मुझसे

प्रश्न कर दिया, "खुरशीद बेगम कौन है ? क्या आप उसे जानते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं किसी खुरशीद बेगम को नहीं जानता।"

कौशल्या मेरी ओर इस प्रकार देख रही थी, जैसे कोई अनुभवी पुलिस का अफ़सर किसी चोर डाकू की ओर देख रहा हो, और देखने ही देखने में उसके आचार का अनुमान कर रहा हो। मुझ पर उसका अत्यधिक प्रभाव हुआ। चित्त भयभीत सा हो गया। मैं सोच रहा था कि इस प्रश्न का अभिप्राय क्या हो सकता है कि इतने में कौशल्या ने दूसरा प्रश्न कर दिया, "२१ अगस्त के दिन आपको क्या काम है ?"

मैंने उत्तर दिया, "कोई काम नहीं।"

"कोई काम नहीं ?"

"हाँ, कोई काम नहीं।"

"तो आप उस दिन कहाँ होंगे ?"

"यहीं जेहलम में।"

कौशल्या ने कुछ घबराहट से पूछा, "जेहलम में। परन्तु कहाँ ?"

"घर पर।"

"तो उस दिन आपको आपत्ति क्या है ?"

"आपत्ति है।"

"परन्तु क्या ? क्या आप मुझे भी नहीं बता सकते ?"

मै कुछ देर चुप रहा। मेरा चुप रहना कौशल्या के लिए असह्य था। उसने अपनी आँखें फिर मेरे चेहरे पर गाड़ दीं, और मेरे अन्तःकरण के अन्दर की बात जानने का प्रयत्न करने लगी। हरदयाल ! उस समय उसका मुख ऐसा प्यारा लगता था, उस पर ऐसी सुन्दरता छाई हुई थी कि मैं मतवाला हो गया। क्या तुमने कभी चकोर देखा है ? चन्द्रमा को देखकर जो दशा उसकी होती है, वही दशा उस समय मेरी थी। सोचता था, मैं कैसा भाग्यवान् हूँ। परन्तु सहसा विचार आया कि पता नहीं इस स्वप्न का फल क्या हो ? प्रसन्नता पर पानी फिर गया। कौशल्या ने फिर पूछा, "आप क्या सोच रहे हैं ?

मैंने लज्जित होकर उत्तर दिया, "कुछ नहीं, आप ही के प्रश्न पर विचार कर रहा था।"

"तो बतलाइए न, आपको क्या आपत्ति है ?"

मेरे मन में विचार आया कि कौशल्या से कह दूँ कि ज्योतिषी ने कहा है कि वह दिन ब्याह के लिए अच्छा नहीं। परन्तु फिर तुम्हारे पत्र ने मुँह बन्द कर दिया। सोचता था कि यह लड़की भी मेरे वहम पर हँसेगी। मैं चुप रहा, और थोड़ी देर बाद बोला, "मैं नहीं बता सकता।"

कौशल्या को जान पड़ता है कि इस उत्तर से बहुत दुःख हुआ। उदास-सी होकर बोली, "मुझे भी नहीं बता सकते ?"

"इस समय तुम्हें भी नहीं बता सकता, परन्तु कुछ दिन ठहरकर बता सकूँगा। उस समय तुम हँसोगी।"

कौशल्या ने लम्बी साँस ली और कहा, "अच्छा न बताओ। परन्तु एक बात स्मरण रखना। उस दिन कहीं घर से बाहर न निकलना।"

मैंने उत्तर दिया, "बहुत अच्छा।"

अब सोच रहा हूँ, न जाने प्रारब्ध में क्या लिखा है। जब तक इस सम्बन्ध की बातचीत न हुई थी उस समय तक मेरा कौशल्या की ओर ध्यान भी न था। परन्तु अब तो उसी की लगन लगी रहती है और मुझे कभी-कभी तो यहाँ तक ख़याल आता है कि मैं उसके बिना रह न सकूँगा। क्या तुम जानते हो कि ब्याह के पहले पत्नी से भेंट करने में क्या आनन्द है। यहाँ आओगे तो बताऊँगा। ऐसे सूक्ष्म भावों के वर्णन करने की शक्ति लेखनी में नहीं। तुम्हारे पिता से पता लगा कि तुम पहली दिसम्बर तक आ सकोगे। क्या इससे पहले नहीं आ सकते और लालचन्द को भी साथ नहीं ला सकते। यह पत्र उसे भी दिखा देना। और सोच-समझकर लिखना कि मुझे क्या करना चाहिए ?

तुम्हारा शुभचिन्तक—
किशोरचन्द।

(६)

बन्दर रोड, कराची
१० अगस्त १९०३

प्यारे किशोरचन्द !

आज हरदयाल यहाँ से चला गया है। जब से उसे गाड़ी पर चढ़ाकर आया हूँ तभी से जी उदास हो रहा है। जन्म-भूमि से कितनी दूर समुद्र के किनारे

पड़ा हूँ, और कोई मित्र पास नहीं। जी चाहता है, पर मिल जायँ तो उड़कर तुम्हारे पास पहुँच जाऊँ। परन्तु क्या करूँ, विवश हूँ। काम काज ने रस्ता रोक रखा है। तुम्हारे पत्र स्वयं तुमसे अधिक रस-भरे हैं। उनके पढ़ने से तुम्हारी सङ्गति का मज़ा आ जाता है। अब तो सौ बिस्वे राय साहब की अप्रसन्नता दूर हो गई होगी। और तुमने मेरे ८ अगस्त के पत्र के अनुसार राय साहब से साफ़ साफ़ कह दिया होगा कि ज्योतिषी ने २१ अगस्त का दिन अशुभ बताया है और यही कारण है कि मैं उस तारीख़ पर ब्याह का विरोध कर रहा हूँ। मेरे विचार में जो बात होनी चाहिए, साफ़ साफ़ होनी चाहिए। ऐसी साधारण बातों को छिपाकर रखना कभी कभी बड़ा भयानक हो जाता है। यही होगा न कि वह तुम्हें पुराने विचारों का सिड़ी समझेंगे, समझें। परन्तु उनको यह तो पता लग जायगा कि तुम अपनी और उनकी बेटी ही की भलाई के लिए यह सब कुछ कर रहे हो। आशा है, वे इससे नाराज़ न होंगे। उनकी नाराज़गी का कारण मेरे विचार में तुम्हारा २१ अगस्त को अस्वीकार करना और उसका कारण न बताना है।

जब वास्तविक बात को वे जान लेंगे तब यह अप्रसन्नता दूर हो जायगी। वापसी डाक से पता दो कि अब परिस्थिति कैसी है, और तुम दूल्हा कब बनते हो। मैं कैसा अभागा हूँ कि इस मङ्गल-समय में भी तुम्हारे पास नहीं आ सकता। तो भी विश्वास रखो, मेरा हृदय तुम्हारे पास है, और तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थना कर रहा है। मेरी ओर से अग्रिम धन्यवाद स्वीकार करो।

तुम्हारा भाई

लालचन्द

(७)

मिनर्वा लाज, जेहलम

२५ अगस्त, १९०३

माई डियर लालचन्द !

यहाँ जो भयानक नाटक हो रहा था वह हो गया, और अब मैं इस योग्य हूँ, कि तुमको सारी घटनाएँ क्रमशः लिख दूँ। इससे तुम्हें उपन्यास का आनन्द आयेगा। पत्र तनिक लम्बा है, परन्तु है अधिक मनोहर।

सबसे पहली बात मैं यह लिखना चाहता हूँ कि एक या किसी दूसरे कारण से मुझे तुम्हारा कराची से केवल एक ही पत्र मिला है, यद्यपि तुम्हारे १० तारीख़ के पत्र से जान पड़ता है कि तुमने इससे पहले ८ तारीख़ को भी मुझे कोई पत्र लिखा है। तुम्हारा वह पत्र मुझे क्यों नहीं मिला, इसका कारण कदाचित् यही है कि वह पत्र हरदयाल ने डाक में छोड़ने से पहले ही उड़ा लिया है।

अब २१ अगस्त की कहानी सुनो।

उस दिन मैं बहुत बेचैन था। कभी अन्दर जाता, कभी बाहर आता; परन्तु हृदय को शान्ति न थी। ऐसा प्रतीत होता था कि मुझ पर कोई विपत्ति आनेवाली है। बार बार सोचता था कि क्या यह दिन कुशल से बीत जायगा? कौशल्या के कथनानुसार मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं उस दिन घर से बाहर न निकलूँगा। परन्तु जो होना हो, उसे कौन टाल सकता है। लगभग दो बजे मैं आफ़िस में बैठा ला की पुस्तकें उलट-पलट रहा था कि चिक उठी और हरदयाल अन्दर आया। इस समय उसका मुख फूल से बढ़कर खिला हुआ था। आते ही बोला, राय साहब से मिलकर आ रहा हूँ, उनसे मैंने सारी बात कह दी है। कहते हैं यदि यह बात पहले से मुझे बता दी जाती तो मैं कदाचित् अप्रसन्न न होता। अब अगले सप्ताह में ब्याह का निश्चय हुआ है। यह सुनकर मेरी जो दशा हुई होगी, उसे तुम जान सकते हो। आनन्द से मतवाला हो गया, और कमरे में टहलने लगा। परन्तु हरदयाल आराम से कुर्सी पर लेटा हुआ मेरी ओर देख रहा था। मैं समझता था कि वह मेरी बावलों की प्रसन्नता को देखकर प्रफुल्लित हो रहा है। परन्तु नहीं, वह दुष्ट—वह रास्कल किसी और ही विचार में था। काश मैं उस समय उसके चेहरे से उसके विचारों को समझ सकता, तो एक भयानक रात्रि से बच जाता।

घड़ी ने छः बजाये। हरदयाल चौंककर खड़ा हो गया। और बोला—"आओ! थोड़ा बाहर घूम आयें।"

मैं बाहर न जाना चाहता था। परन्तु हरदयाल ने मेरी एक न सुनी, और मुझे बलात् घसीटकर ले गया। कौशल्या के शब्द कानों में गूँजते थे, ज्योतिषी की भविष्यद्वाणी मुझे रोकती थी, परन्तु हरदयाल मेरी एक न सुनता था, और हठ करता था कि मेरे साथ चलो। अन्त में मैं मान गया। मैं उसे

रुष्ट करना न चाहता था। वह मेरा मित्र था। कम से कम मैं उसे ऐसा ही समझता था। हम दोनों बाहर गये। मौसम बहुत ही अच्छा था। हरदयाल धीरे धीरे गुनगुना रहा था।

कर्मन की गति न्यारी रे ऊधो।

कैसा समय था। शीतल वायु, चारों ओर सन्नाटा, आकाश निर्मल, मीठी रागिनी का आलाप कानों में, और अथाह सुख हृदय में। मुझ पर जादू-सा हो गया। मैं तन्मय होकर झूमने लगा, मानो किसी दिव्य शक्ति से हृदय की चिन्ताएँ क्षण-मात्र में दूर हो गई थीं। मैंने हरदयाल की ओर देखा। वह स्वतन्त्र पक्षी की नाईं प्रसन्न था, और उसकी आवाज़ आकाश तक जा रही थी—

कर्मन की गति न्यारी रे ऊधो।

सहसा हम मोड़ पर पहुँचे। यहाँ से उस पुरानी गुफ़ा को रस्ता जाता है, जो लोगों में भूतनिवास के नाम से प्रसिद्ध है। तुम्हें भूला न होगा कि हम कई बार उसके अन्दर जा चुके हैं। वह स्थान कैसा भयानक है? अन्दर पाँव रखते ही हृदय धड़कने लगता है। परन्तु मैं कई बार उसके अन्दर बहुत दूर तक जा चुका हूँ। हरदयाल ने उस ओर मुड़ते हुए कहा, "आज भूत-निवास की ओर चलेंगे"। पता नहीं क्यों मेरा हृदय काँप गया। परन्तु मैं मुँह से कुछ न बोल सका और चुपचाप हरदयाल के पीछे चला गया, जिस प्रकार स्वामिभक्त कुत्ता अपने स्वामी के पीछे चला जाता है। यहाँ तक कि हम उस पुराने समय की गुफ़ा के पास पहुँच गये। कोई साढ़े सात बजे होंगे, सूर्य अस्त हो रहा था, अन्धकार प्रकाश को खा रहा था। ठंडी वायु चलने लगी। हरदयाल एकाएक आगे बढ़ा और लोहे की सीख़ों का दरवाज़ा खोलकर गुफ़ा के अन्दर चला गया। प्रकाश थोड़ी दूर तक जाता था। परन्तु उसके आगे अथाह अन्धकार था। हरदयाल तेज़ी से उसके अन्दर घुसकर लोप हो गया और कुछ क्षण पश्चात् बोला, "किशोर! देखो मैं कितनी दूर आ गया हूँ।"

आवाज़ की गूँज ने उसका समर्थन कर दिया। इसके साथ ही भारी पाँव की

चाप सुनाई दी। थोड़ी देर बाद हरदयाल रूमाल से पसीना पोंछता हुआ निकल आया और मुझसे बोला, "तुममें भी साहस है तो जाकर दिखाओ। ओह! कितना अँधेरा है।"

लालचन्द! मैं डर-सा गया था। इसलिए मैं न चाहता था कि उस भयानक गुफ़ा के अन्दर पैर रखूँ। परन्तु विचार आया कि हरदयाल क्या कहेगा। मुझे कायर समझने लगेगा। चार मित्रों में खिल्ली उड़ायगा, यह असह्य है। मैं गुफ़ा के अन्दर घुस गया। उसके अन्दर भयानक अन्धकार था। मुझे सन्देह होने लगा कि दिन के प्रकाश को निगल जानेवाला अन्धकार कदाचित् रात को यहीं से निकलता होगा। मेरा दम घुटनेलगा। चारों ओर से डर लग रहा था। परन्तु मनुष्य अपनी निर्बलता दूसरों पर प्रकट नहीं करना चाहता। मैंने हृदय को कड़ा किया और धीरे धीरे वापस हुआ।

पर बाहर आकर हृदय बैठ गया। दरवाज़ा बाहर से बन्द था, और उस पर ताला पड़ा हुआ था।

मैंने सिर पीट लिया।

लालचन्द! ज़रा विचार करो। मैंने चिल्ला चिल्लाकर हरदयाल को बुलाया। परन्तु उसने मेरी और मेरी आवाज़ दोनों की कोई परवा न की। हाँ, दूर से उसकी आवाज़ गाती हुई सुनाई दी।

कर्मन की गति न्यारी रे ऊधो

इस समय यह आवाज़ कैसी भयानक प्रतीत होती थी। एक एक शब्द हृदय के लिए हथौड़ा बन गया। मैं सोचने लगा, यह क्या हो गया है? और इसका कारण क्या हो सकता है। परन्तु कुछ समझ न सका। हरदयाल की आवाज़ धीरे धीरे निस्तब्धता के समुद्र में डूब गई। उसके साथ ही मेरा धैर्य्य भी डूब गया। आँखों में आँसू भर आये। मैंने चीख़-चीख़कर पुकारा। परन्तु कोई सहायता को न पहुँचा। यहाँ तक कि रात हो गई, और आकाश पर चन्द्रमा चमकने लगा। कभी यही चन्द्रमा देखकर मेरा मन मोर की नाईं नाचने लगता था। परन्तु इस समय घावों पर नोन छिड़का गया।

दस बज गये थे। मैं दरवाज़े के साथ लेटा निराशा में डूबा हुआ था। चन्द्रमा की किरणें मेरे निर्जन क़ैदख़ाने में आ रही थीं। एकाएक सरसराहट

का शब्द सुनाई दिया। मैं चौंक पड़ा। आँख उठाकर देखा तो लहू सूख गया। मुझसे एक गज़ की दूरी पर एक भयङ्कर नाग रेंगता हुआ आ रहा था। मेरी आँखों में मृत्यु का चित्र फिर गया। सोचने लगा, क्या करना चाहिए। कोई लाठी, कोई ईंट, कोई पत्थर पास न था। यहाँ तक कि बूट भी पाँवों में न थे। क्रोध से मैंने उन्हें भी उतारकर परे फेंक दिया था। और वह काली मृत्यु धीरे धीरे मेरे निकट सरक रही था, मानो उसे निश्चय हो चुका था कि अब मेरा भागना असम्भव है। मेरी बुद्धि काम न करती थी। इन्द्रियाँ शिथिल हो रही थीं। बल क्षीण हो रहा था; जैसा कभी कभी स्वप्न में हो जाता है। मैंने आँख उठाई, नाग और भी निकट आ गया था। मैं घबरा गया। कोई उपाय न सूझा। सोचने लगा, क्या मेरी मृत्यु इसी निर्जन गुफ़ा में होने को है। सहसा अन्धकार में बिजली चमक गई। विचार आया, क्या यह उचित न होगा कि मैं चित लेट जाऊँ और सर्प मेरे शरीर के ऊपर से निकल जाय। सोचने का समय न था। मैंने शरीर ढीला छोड़ दिया और चुपचाप पड़ा रहा। एकाएक सर्प का शरीर मुझे अपने समीप लहराता हुआ दिखाई दिया। और एक क्षण पश्चात् मेरे कलेजे के साथ कोई कोमल-सी वस्तु आकर लगी। मेरा रक्त भय से जम गया। शरीर पसीने से भीग गया। दिमाग़ खौलने लगा। संसार एक स्वप्न-सा प्रतीत होने लगा। सर्प शनैः शनैः सरकता हुआ मेरी छाती पर चढ़ आया और वहाँ कुण्डली मारकर बैठ गया। मैंने यह देखा और मेरे प्राण होंठों पर आ गये। इसके साथ ही मैं अचेत हो गया।

प्रातःकाल जब मेरी आँख खुली उस समय सूरज निकल चुका था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे रात को भयानक स्वप्न देखा है। आँखें मलता हुआ उठ बैठा। परन्तु गुफ़ा का दरवाज़ा बन्द देखकर फिर वास्तविक अवस्था सामने आ गई, और ओह! पास ही साँप पड़ा सो रहा था। वही काला मृत्यु इस समय भी मेरी आँखों के सामने पड़ी थी। मुझ पर फिर भय छा गया। सहसा किसी के पाँव की चाप सुनाई दी। मेरा हृदय धड़कने लगा। सामने हरदयाल खड़ा देख रहा था। क्या एक साँप मेरे मारने के लिए थोड़ा था, जो परमात्मा ने एक और भेज दिया। मैंने घृणा से मुँह फेर लिया। मैं मर रहा था, परन्तु मेरा अभिमान अभी तक जीता था।

हरदयाल ने साँप को देखा तो ठिठक गया। इस समय उसका मुख हलदी से अधिक पीला था, लाश से अधिक भयानक। वह तेज़ी से भागता हुआ चला गया, और आध घण्टे के पश्चात् वापस हुआ। यह आध घण्टा मेरे लिए आधी शताब्दी से भी लम्बा था। इस समय उसके एक हाथ में दूध का बरतन था, दूसरे में पिस्तौल। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला। मेरा लहू सूख गया। साँप का जागना मृत्यु का जागना था। तब उसने दूध का बरतन साँप के निकट रख दिया और हाथ से ताली बजाई। साँप न जागा। फिर बजाई, फिर भी न हिला। अन्त में ज़ोर से चिल्लाया, और पूरे ज़ोर से ताली बजाई। साँप की नींद खुल गई। उसने दूध के बरतन को देखा, राजाओं के समान आगे बढ़ा, ग्रीवा उठाई, और दूध के बरतन में झुक गया। तत्काल पिस्तौल चला, और साँप की देह लोटने लगी। दूध के लोभ में आगे बढ़ा था, मौत का ज़हर पीना पड़ा। मैंने छलाँग मारी, और क़ब्र से बाहर आया।

हरदयाल रोता हुआ मेरे पैरों से लिपट गया और बोला, "मुझे क्षमा कर दो।"

मैंने आश्चर्य्य से पूछा, "पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। फिर क्षमा करूँगा।"

हरदयाल ने कहा, "पूछिए।"

मैंने पूछा, "यह जो कुछ हुआ है, क्या है?"

"अकारण पाप का तमाशा।"

"नहीं खुलासा कहो!"

"मैं चाहता था कि कौशल्या से मेरा ब्याह हो। इसलिए मैंने कराची से ज्योतिषी को लिख दिया था कि तुम्हें भ्रम में डाल दे, और २१ अगस्त को अशुभ दिन बतला दे। उधर मैंने राय साहब हीरालाल को सूचना दी कि किशोरचन्द के आचार अच्छे नहीं हैं, और ख़ुरशीद बेगम से उसका सम्बन्ध है। ख़ुरशीद को पता लग गया है कि २१ अगस्त का दिन ब्याह के लिए नियत हो गया है, परन्तु किशोर इसे नहीं मानता। अन्त में निश्चय यह हुआ है कि उस रात किशोरचन्द ख़ुरशीद बेगम ही के यहाँ रहेगा, और आपसे वह तारीख़ बदलने की प्रार्थना करेगा। राय साहब ने यह पढ़ा तो लाल-पीले हो गये, और

उन्होंने निश्चय कर लिया कि यदि यह बात सच निकली तो कौशल्या का ब्याह मेरे साथ कर देंगे।"

"तुम्हारे साथ ?" मैंने चिल्लाकर पूछा।

"हाँ मेरे साथ ! इसी लिए मैंने यह सब कुचक्र रचा और तुम्हें यहाँ बन्द करके राय साहब के यहाँ पहुँचा। परन्तु कौशल्या ने हठ किया कि जब तक राय साहब अपनी आँखों से तुम्हें ख़ुरशीद के यहाँ न देख आयेंगे तब तक मैं इस पर विश्वास न करूँगी। परिणाम यह हुआ कि उस रात राय साहब ख़ुरशीद बेगम के यहाँ पहुँचे और भण्डा फूट गया।"

मैंने कहा, "यह सब बातें राय साहब के मुँह पर कह सकोगे ?"

"कह सकूँगा।"

"कब ?"

"अभी चलकर।"

"तो चलो।"

यह कहकर हरदयाल मेरे साथ चला और हम दोनों रायसाहब के पास पहुँचे। उस समय वे बड़े उदास थे। मुझे देखकर इस प्रकार खिल गये जैसे दीपक में तेल पड़ जाता है। परन्तु हरदयाल को देखकर उनके तन-बदन को आग लग गई। कड़ककर बोले, "तू यहाँ क्यों आया है ?"

मैंने उत्तर दिया, "इसका आना आवश्यक था।"

रायसाहब कुर्सी पर बैठ गये। हरदयाल ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया, और अपने अपराध को स्वीकार किया। इस समय रायसाहब की आँखों में आँसू छलक रहे थे। मुझे गले लगाकर बोले "मुझे क्षमा कर दो, मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है।"

हरदयाल उठकर बाहर निकल गया। मैं चुप था, आनन्द ने मेरी जीभ बन्द कर दी थी। राय साहब बोले, "जाओ आराम करो, परन्तु यह ब्याह अगले महीने अवश्य हो जाना चाहिए। यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा है। तुम्हें अब कोई आपत्ति तो नहीं ?"

मैंने सिर हिला दिया।

तुम्हारा शुभचिन्तक—

किशोरचन्द

नोट—कल से हरदयाल का कोई पता नहीं। लोग कहते हैं कि वह अपने पापों का प्रायश्चित्त करने कहीं चला गया है। परन्तु मुझे इस पर विश्वास नहीं।

(८)

नागभूमि

२१ अगस्त १९०५

माई डियर किशोरचन्द !

दो वर्ष बीत गये। मैं अपने पाप का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ, मैं कहाँ रहता हूँ यह नहीं लिखूँगा। परन्तु इतना लिख देता हूँ कि यह स्थान सर्पों का घर है। इस ओर आने का लोग साहस नहीं कर सकते। आसपास के लोग इसे हत्यारी भूमि के नाम से पुकारते हैं। परन्तु मैं इसे नागभूमि कहता हूँ। दिन-रात बड़े बड़े विषधर सर्प आँखों के सामने रहते हैं। प्रतिक्षण भय रहता है कि कोई सर्प काट न खाय। रात को सोता हूँ, तो यह नहीं कह सकता कि प्रातःकाल उठूँगा या नहीं। मृत्यु सदा सामने दिखाई देती है, परन्तु निकट नहीं आती—यह दुःख मौत से बढ़कर है। लोग एक बार मरते हैं, मैं प्रतिक्षण मरता रहता हूँ। परन्तु मुझे इस बात का सन्तोष है कि मैंने इसी जन्म में अपने कर्मों का फल पा लिया है।

आज २१ अगस्त है। वही जेहलम की गुफ़ा याद आ रही है। ओह ! मैं कितना निर्दय, कितना पापी, कैसा मित्रमार हूँ। उस दिन मुझे क्या हो गया था ? मेरी बुद्धि पर कैसा परदा पड़ गया था ? मैंने कितना नीच कर्म किया था ? अब भी वह घटना याद आती है, तो लहू सूख जाता है। आह ! वह काला साँप जब तुम्हारी छाती पर बैठा होगा, उस समय तुम्हारा प्रेम से भरा हुआ हृदय क्या कहता होगा ? जब इसका विचार करता हूँ, तो दिमाग़ में आग सी लग जाती है। परन्तु प्यारे किशोरचन्द ! दो वर्ष से इसी प्रकार के काले साँपों में जीवन बिता रहा हूँ। जी चाहता है कि एक बार तुम्हें देख लूँ। परन्तु क्या करूँ, साहस नहीं पड़ता। तुम्हारे सम्मुख आँखें नहीं उठ सकेंगी। कभी उनमें प्रीति खेलती थी, आज क्रोध बैठा होगा। वह क्रोध देखकर मेरी आँखें सहन न कर सकेंगी। इसी से तुम्हारे सामने नहीं आऊँगा।

यहीं रहूँगा, जब तक जीता रहूँगा, इन्हीं सर्पों को—मृत्यु की प्रत्यक्ष मूर्तियों को देखूँगा और अन्त में इन्हीं में से किसी एक के विष से मर जाऊँगा।

परन्तु एक लालसा है और रहेगी कि तुम दोनों मुझे क्षमा कर दो, ताकि मरते समय शान्ति से मर सकूँ। मैंने जो गढा तुम्हारे लिए खोदा था, उसमें स्वयं गिरा। और २१ अगस्त का दिन मेरे ही लिए अशुभ सिद्ध हुआ। ओह! परमेश्वर ने मेरी जीवन-पुस्तक में यह काला पृष्ठ क्यों रख दिया?

तुम्हारा अभागा मित्र—

हरदयाल।

———